

CONTRIBUTION OF CONTEMPORARY WOMEN ARTISTS: ARTISTS' VOICE AND ART MEDIUM : WITH REFERENCE TO ANITA DUBEY AND NALINI MALANI (समकालीन महिला कलाकारों का योगदान: कलाकारों की आवाज़ और कला-माध्यम : अनीता दूबे व नलनि मलानी के संदर्भ में)

Preeti Kapariya^{a*} Dr. Neelam Kant^b

^a *Research Scholar, Drawing and Painting Dr. Bhimrao Ambedkar University Agra*

^b *Associate Professor & Head of Painting Department, Drawing and Painting Dr. Bhimrao Ambedkar University Agra*

^a*Email: preetikapariya256@gmail.com*

Abstract

The contributions of contemporary women artists and their voices not only have artistic significance but also promote cultural discourse and sociality. Nalini Malani and Anita Dubey, both artists, have depicted feminist discourse and the complexities of society through their art. Malani has brought global recognition to women's voices through installations, performances, murals, and media art, while Dubey has raised her voice against patriarchy and violence against women in society through architectural writing and installation. For more than four decades, Malani has carved a distinct identity for herself within Indian patriarchy. Generally, it can be said that Nalini Malani and Dubey's art has given a strong recognition to women's discourse in Indian and modern times on the world stage.

समकालीन महिला कलाकारों का योगदान एवं कलाकारों की आवाज़ का न केवल कलात्मक महत्व है बल्कि वह सांस्कृतिक विमर्श व सामाजिकता को भी बढ़ावा देता है नलिनी मलानी और अनीता दूबे दोनों कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से स्त्री विमर्श स्मिता, समाज की जटिलताओं का ही अंकन किया है मलानि ने इंस्टॉलेशन परफॉरमेंस म्यूरल, मीडिया कला के माध्यम से स्त्री आवाज़ को विश्वस्तर पर पहचान दिलाई है वहीं दूबे ने वास्तुकला लेखन इंस्टॉलेशन में समाज में स्त्री पर हो रही हिंसा, पितृसत्तात्मकता, हिंसा पर आवाज़ उठाई। गत चार दशकों से भी अधिक समय से मालिनी ने भारतीय पुरुषसत्ता में अपनी अलग पहचान बनाई है। सामान्यतः यह कह सकते हैं कि नलनि मलानी ने और दूबे की कला ने भारतीय व आधुनिकता में स्त्री विमर्श को विश्व मंच पर सशक्त पहचान दिलाई।

Keywords: feminism, art creation, beauty, struggle, sensitivity, artistic dialogue.

नारीवाद, कलासृजन, सौन्दर्य, संघर्ष, संवेदना, कला संवाद।

* Corresponding author.

प्रस्तावना

समकालीन कला में भारतीय महिला कलाकारों ने अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति अंकित की है समाज के बदलते सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं के बीच विमर्शों को हिस्सा न बनाकर उसे संवाद, स्त्री अस्मिता की आवाज़ बनाया न कि कला को सिर्फ सौन्दर्य बोध तक सीमित रखा। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 21वीं शताब्दी तक समकालीन महिला कलाकारों ने अपने संघर्षों, अनुभवों, कार्यों के माध्यम से कला माध्यमों के नये आयामों के विमर्शों को जन्म दिया। इस परम्परा की प्रमुख कला प्रतिनिधि के रूप में इन महिला कलाकारों में जैसे अनीता दूबे व नलनी मलानी का नाम स्वतः प्रतिबिम्बित हो

जाता है अनीता दूबे ने इन्स्टॉलेशन आर्ट, टेक्स्ट बॉडी कला को सामाजिक व राजनैतिक पहलू से जोड़कर कला को व्यक्त करने का माध्यम बनाया है। दूसरी तरफ नलनी मलानी ने थिएट्रिकल, शैडो प्ले व वीडियो आर्ट के जरिये, कला में स्त्री अनुभव, संघर्ष, हिंसा विस्थापन और स्मृति (यादों) को अन्तर्राष्ट्रीय विषय के रूप में उपलब्धि दिलाई जो कलाकारों की कला की आवाज़ बन गई। इन कलाकारों की आवाज़ केवल व्यक्तिगत तक सीमित नहीं है बल्कि व्यापक रूप से सामाजिक चेतना की वाहक भी है। जिस कारण इन कलाकारों की आवाज़ को नई दिशा में प्रसार मिला, जिससे यह कलाकारों की कला अभिव्यक्ति का साधन होने के साथ-साथ आलोचनात्मक दृष्टि व सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बनती जा रही है। समकालीन भारतीय महिला कलाकारों का विशेष योगदान यह है कि उन्होंने कला को केवल सौन्दर्य बोध तक नहीं रखना चाहिए बल्कि इस परिभाषा को पूर्णतः नकार दिया उनकी कृतियों में सामाजिक, अन्याय, महिला-दुर्दशा, हिंसा, गरीबी, घरेलू झगड़े, स्मृति पहचान, लैंगिक भेदभाव जैसे विषयों को चित्रित करना प्रारम्भ किया। समकालीन कलाकारों के लिए कला आत्मिक आत्म संतुष्टि के साथ-साथ प्रतिरोध व संवाद का भी माध्यम हैं। सामान्यतः हम कह सकते हैं कि महिला कलाकारों की कला उनकी कला के साथ-साथ उनकी आवाज़ है जो एक ऐसी आवाज़ है जो सामाजिक बुराई कुरीतियों भेदभाव तथा परम्परागत सत्ता को चुनौती देती है और समाज को आईना दिखाने का प्रयास करती है।

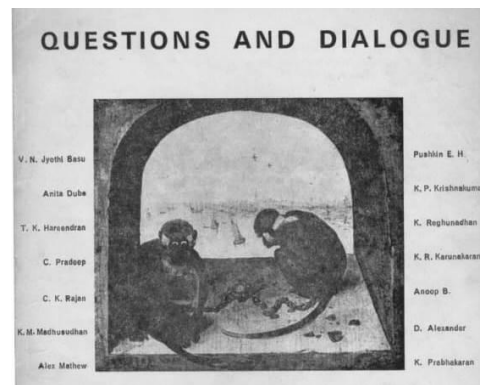
शोध का उद्देश्य-

1. समकालीन भारतीय महिला कलाकारों की कला क्षेत्र में योगदान का विश्लेषण करना।
2. यह समझाना की कला किस प्रकार से समकालीन समय में महिला कलाकारों की आवाज़ बन रही है।
3. अनीता दूबे एवं नलनी मलानी द्वारा चयनित कला माध्यमों और उनके द्वारा उठाये गए विषयों का अध्ययन करना।
4. समकालीन कला में नवीन मीडिया की प्रयोगधर्मिता और सामाजिक व राजनैतिक विमर्श की महत्ता को स्पष्ट करना।

शोध की प्रासंगिकता

आज की कला केवल वस्तुगत सौन्दर्य तक न रहकर सामाजिक चिन्तन का केन्द्र बन गई हैं जब महिला कलाकारों की आवाज़ का योगदान अहम हो जाता है जिनमें अनीता दूबे और नलनी मलानी जैसी प्रतिष्ठित इन्स्टॉलेशन, कलाकार व चित्रकारों की कला से यह स्पष्ट होता है कि कला किस प्रकार "आवाज़" का स्वरूप ले सकती है और नवीन मीडिया के प्रयोग से दर्शकों को सोचने तथा समाज को परिवर्तित करने के लिए प्रेरित कर सकती है। अनीता दूबे की कला का योगदान-भारत की अनीता दूबे अत्यधिक रचनात्मक कलाकारों में से एक हैं जिन्हें निरंतर चुनौतीपूर्ण, मूर्तिशिल्प, फोटोग्राफी, इन्स्टॉलेशन वीडियो संस्थापना तथा परफॉर्मेंस में भी कार्य करने के लिए जाना जाता है। अनीता दूबे समकालीन भारतीय कला की एक महत्वपूर्ण हस्ती हैं जिनका जन्म 1858 को लखनऊ में हुआ अनीता दूबे को इतिहासकार व कला समीक्षकों के रूप में भी प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। दूबे अपना अध्ययन व प्रशिक्षण दोनों बड़ौदा से ही प्राप्त किया है। उनकी कला में शरीर व भाषा को विशेष स्थान दिया गया है उनके कला कर्म अवधारणात्मक अनुभवों की ओर मुड़े हैं कला में वह विशेष सामग्री का प्रयोग कर कलाकृतियों का निर्माण करती हैं जैसे-वेलवेट तथा अन्य प्रकार के कपड़े कॉपर, ईनामेल से बनी आँखें, पैकिंग सामग्रियाँ आदि का प्रयोग उन्होंने अपनी कला में किया है। कुछ बीते समय में इन्होंने भाषा तथा टेक्स्ट का प्रयोग करने का भी विवरण प्राप्त होता है जिन्हें वह हमेशा व्यंग्य व अमूर्त स्वरूप में प्रयोग करती थीं। कला निर्मिति की उनकी अपनी समझ सदैव उन्हें नियमों के बंधन को तोड़ने की प्रेरणा देती है तथा एक नवीन संसार में पदार्पण कराती है चित्र संख्या 1- में अनीता ने कला में बाजारीकरण का दोषारोपण भी लगाया। राजनैतिक, सामाजिक प्रतिबद्धता की कमी का जिक्र भी किया गया है।

अनीता दूबे कहती हैं-"मैं भारत में जहां से आती हूं वहां हम हर चीज सुरक्षित रखते हैं, हर वस्तु को पुनः प्रयोग में लेते हैं, पूंजीवाद का तर्क अधिक से अधिक संरक्षण में है, अधिक रखने में है तथा अधिक कचरा बनाने में है।" उन्होंने अपना एक सौन्दर्य बोध निरूपित किया जिनमें वे दैनिक जीवन की वस्तुओं का प्रयोग करती हैं और कुछ इस संदर्भ में प्रयोग करती हैं कि जिसका वास्तविकता से परे ही अर्थ निकलता है। उनका चित्र संख्या-2-(Illegal) नामक श्रृंखला प्राप्त आकृतियों के साथ सीधा सम्बंध था।



चित्र 1 https://cdn.aaa.org.hk/_source/1987-questions-and-dialogue.pdf



चित्र 2
<https://knmablog.wordpress.com/category/artists/anita-dube/>

जिसमें इराक युद्ध के प्रिन्ट, टी.वी. फुटेज का इस्तेमाल किया गया उनके कुछ चित्र में स्वयं के हुए प्रतीकवाद तथा विरोधाभाषों का प्रयोग किया 2 जो चित्र संख्या-3 "साइलेंस ब्लड बेडिंग" में प्रस्तुत होता है जो समाज में फैली असमानता व राजनैतिक सत्ता की 1 2 संरचनाओं की आलोचना प्रस्तुत करती है।

नलिनी मलानी का योगदान

नलिनी मलानी भारतीय कला में समकालीन दौर की एक सशक्त आवाज़ हैं उनका नाम उन महिला कलाकारों में लिया जाता है जिन्होंने न केवल चित्रकला को नवीन आयाम दिए बल्कि कला और मीडिया में भी कार्य किया इनके अधिकतर कार्य महिलाओं के मुद्दों से भी जुड़े होते हैं। नलिनी का जन्म 1946 में करांची में हुआ था, वे ऐसी समकालीन भारतीय कलाकार थीं जिन्होंने कला को आवरण से बाहर निकाला और वीडियो इंस्टॉलेशन प्ले शेडों में बदला। उनके द्वारा कलाकारों की दुनियाँ में स्त्री अस्मिता सामाजिक न्याय, विस्थापन, साम्प्रदायिक हिंसा जैसे गंभीर विषय से को लिखा गया है।

नवाचार - नलिनी मलानी ने परम्परागत विषय को आधुनिक व समकालीन तकनीक व नए माध्यमों से जोड़कर प्रस्तुत किया है उन्होंने मिश्रित माध्यम से चित्रों व ड्राइंग वीडियो बनाये।

स्त्री-विमर्श व सामाजिकता - उनकी कला में अधिकतर विषय महिलाओं से जुड़े होते हैं कला का केन्द्रीय बिन्दु स्त्री पीड़ा उनके सघर्ष और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं उन्होंने भारतीय परिदृश्य को रचनात्मक अभिव्यक्ति दी।

पहचान - "किसी कलाकार को बौद्धित प्रगति करते हुए अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ कार्य करते हुए देखना एक अद्भुत अनुभव हो सकता है। "Nalini Malani's exhibition opening at the chemould and Jehangir galleries on Tuesday is going to be a departure from conventional shows-Ashish Rajadhyaksha³ यह वक्तव्य यह प्रदर्शित करता है कि नलिनी का कार्य आधुनिकता की पराकाष्ठा लिए हुए है।

विषय आधारित कला - उनके चित्रण कार्यों में पौराणिक आख्यानों, स्मृतियों, लोककथाएं समकालीन यथार्थ से जुड़े मुद्दे थीम पर आधारित होते हैं इसी प्रकार एक समाचार पत्र में भी उनके थीम के ऊपर यह बात लिखी गई थी कि "एक पूर्व व्यापी प्रस्तुति नलिनी मलानी की व्यापक कृतियों को एक साथ लाती है जिसमें वीडियो कैमरा रहित तस्वीर या रिवर्स पेंटिंग शामिल है जिसमें शीर्षक दिया गया" तैरती दुनियाँ के कलाकार⁴ "Artist of the floating world" A retrospective brings together Nalini Malani's wide spread oeuvre comprising videos Camera less photographs or reverse paintings"

नलिनी मलानी लगातार नई-नई तकनीकों को खोजती रही और उनके थीम आधारित कला में अन्यत्र विषय शामिल होते रहे उनका मानना था कि केवल अपने अतीत को पुनः जीकर की आप अपना भविष्य पुनः प्राप्त कर सकते हो उन्होंने कलात्मक परम्पराओं को त्यागे बिना एक नई थीम में विषय को गढ़ना शुरू किया जो आज भी भारतीय कला में कलाकारों को चुनौतिपूर्ण लगता है यह बात उन्होंने एक साक्षात्कार के दौरान विश्वनाथन के सम्मुख कही थी-"It is only through reliving your past that you can recover your future"⁵

उनके वीडियो, इंस्टॉलेशन, अवसर, विभाजन, लैंगिक मुद्दे, संघर्ष समस्या को दर्शाते हैं। "मलानी स्वयं अपनी जड़े एक महिला और भारतीय होने के रूप में ही देखती हैं उनके कार्य दुनियाँ के प्रति उनके व्यवहार करने की पहचान को ही दिखाते हैं।"⁶

कला माध्यम और प्रयोगधर्मिता-

इन दोनों चित्रकारों का कला के क्षेत्र में सबसे विशेष योगदान यह है कि उन्होंने कला माध्यमों में नई पद्धति व नई क्रियाविधि की सम्भावनाएं खोजी अनीता दूबे ने जहां इंस्टॉलेशन टेक्स्ट और वस्तुओं को संवाद और कला के रूप में देखा वहीं दूसरी तरफ नलिनी मलानी इंस्टॉलेशन, आर्ट मल्टीमीडिया, वीडियो आर्ट को विश्वस्तर पर प्रदर्शित किया। इसी कारण उनकी कला केवल कला दीर्घाओं गैलरी तक सीमित नहीं रही बल्कि सामाजिक स्तर से जुड़कर वह राजनैतिक व इतिहास का व्यापक विमर्श का हिस्सा बनी रही कलाकारों की प्रयोगधर्मिता समसामयिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों व उसके परे एक दीर्घकालिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है 2003 में लिखे निबंध में फिलिपे बेर्गने ने दूबे कार्यों के बारे में लिखा। दूबे के भाषा आधारित कार्य मूर्तिशिल्प सर्वाधिक पसंद किये गये। उन्होंने कहा भी था कि "मुझे रुचिकर लगता है कि कैसे एक शब्द स्थापत्य में परिवर्तित होता है।" यह उद्धरण 2007 में बने 5 words शीर्षक से लिया गया है। वह 2013 में वे आर्ट एण्ड कल्चर फुकुओका प्राइज जीतकर पहली एशियन महिला कलाकार बनीं। यह पुरस्कार उन्हें उनके चित्र संख्या-4 <https://www.mplus.org.hk/en/collection/object/city-of-desires-2019527>



चित्र 3 <https://khojstudios.org/project/silence-blood-wedding/>

साहसी समकालीन और सार्वजनिक मुद्दों जैसे- धार्मिक विरोधाभास, युद्ध, महिलाओं के मुद्दों और वातावरणीय विनाश आदि पर लगातार कार्य करने के लिए दिया गया। 1992 में किया संस्थापन चित्र संख्या-4 City of Desires महत्वपूर्ण कार्य था जो सीधे दीवारों पर चित्रांकित किया गया है। नलनी मालिनी लगातार नई तकनीकें खोजती रही जिसमें रिवर्स पेंटिंग तकनीकी थी जिसका लगातार उपयोग उन्होंने किया।

निष्कर्ष-

भारतीय समकालीन महिला कलाकारों में चित्रकला की प्राचीन परम्परागत चली आ रही सीमाओं को तोड़कर वर्तमान कला जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। अनीता दूबे और नलनी मलानी जैसी कलाकारों ने सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति को नकारकर सामाजिक व राजनैतिक और स्त्री अस्मिता से कला को जोड़ने का कार्य किया। नलनि मलानी समकालीन भारतीय कलाकार में चित्रकला के फ्रेम से बाहर आकर कला का स्वरूप बदलकर उसे नवीन रूप वीडियो प्ले और शोडो प्ले में बदला और संस्थापन कला में भी कार्य किये अधिकतर उनके कार्य इन्हीं दो बिन्दुओं का हिस्सा हुआ करते थे। वहीं अनीता दूबे की कला लेखन शारीरिक प्रतीकों के जरिये स्त्री की चुप्पी को तोड़ने का काम किया। उन्होंने प्रतीकों को मुहावरात्मक तरीके से तथा अमूर्त व्यंजनाओं के रूप में प्रयुक्त करती हैं कला में उनकी समझ इतनी प्रबल हो गई थी कि वे नियमों के बंधनों को तोड़ने की प्रेरणा देती है तथा एक नई अपरचित दुनियां से सरोकार करवाती है।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दोनों महिला कलाकारों ने प्रमाणित किया है कि कला के लिए सिर्फ दृश्यात्मक अनुभव पर्याप्त नहीं होते बल्कि सामाजिक विमर्श शक्तिशाली माध्यम होते हैं। इनके योगदान से नारीवादी दृष्टिकोण मानवीय संवेदना की सफल अभिव्यक्ति हुई है। दोनों कलाकारों की आवाज़ में कला के क्षेत्र में नारी के अस्तित्व, अधिकार, संघर्ष को व्याख्यायित करते हुए कला को एक उच्च स्थान प्रदान किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महावर, डॉ० कृष्णा, 2020 "भारतीय संस्थापन कला", राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या 156
2. महावर, डा० कृष्णा "नवीन मीडिया कला" वर्ष 2022 राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या-318
3. The Sunday Time of India 1991, 17 Nov.
4. The Indian Express "The Arts" 28.04.2014
5. "The Independent Saturday" The Art's 1990, 20 January
6. महावर, डा० कृष्णा "भारतीय संस्थापन कला" 2020 राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर पृष्ठ 147-198
7. महावर, डा० कृष्णा "भारतीय संस्थापन कला" 2020 राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर पृष्ठ 158
8. महावर, डा० कृष्णा "भारतीय संस्थापन कला" 2020 राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर पृष्ठ 148
9. महावर, डॉ० कृष्णा "नवीन मीडिया कला" 2022, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर। (11)